रेडियो तंरगें और स्वास्थ्य

3 जी

थर्ड–जनरेशन मोबाइल टेलेफोनी 3 जी में उसी तरह की रेडियो तंरगें प्रयुक्त की जाती हैं जिस तरह की रेडियो तंरगें टेलीविजन्‌ रेडियो और अन्य विद्यमान मोबाइल नेटवर्क्स में प्रयुक्त की जाती हैं। बेस स्टेशन इस तरह से अवस्थित हैं कि रेडियो तंरगों का प्रभाव निर्धारित सीमाओं से कम रहे।

3 जी मोबाइल टेलीफोली एक विकसित रूप है जो कई वर्षों से प्रयोग में लाई जा रही है। यह बढ़ी हुई क्षमता उपलब्ध कराती है ताकि अधिक लोग एक ही समय पर मोबाइल संचार सेवाओं का उपयोग कर सकें। इसका उपयोग और प्रयोक्ताओं की संख्या बढ़ने से नेटवर्क्स का विस्तार होता है।

थर्ड–जनरेशन मोबाइल टेलीफोनी नई सेवायें उपलब्ध कराती है जो कार्य और फुरसत दोनों समय सहायक होती हैं। उदाहरण के लिए इंटरनेट से उच्च–गति सम्पर्क कड़ी भी बनाया रखा जा सकता है। अन्य सेवायें वीडियो कॉल्स और स्थान निश्चित् करने से संबंधित हैं जिनका उपयोग बचाव सेवाओं तथा स्वास्थ्य की देखरेख से लेकर मनोरंजन तक के लिए किया जा सकता है। 3 जी में ये रेडियो तंरगें उसी प्रकार की होती हैं जैसे रेडियो और टेलिविज़न प्रसारण में तथा रेडियो संचार में प्रयुक्त होती हैं जिनका पुलिस. एयर ट्रैफिक. शिपिंग और परिवहन कम्पनियों द्वारा कई वर्षों से किया जा रहा है। रेडियो बेस स्टेशनों से 3 जी और अन्य मोबाइल टेलीफोनी के लिए प्रसारित विद्युत शक्ति के स्तर सोसाइटी में प्रयुक्त अन्य रेडियो संचारों की तुलना में अपेक्षाकृत कम होते हैं।

स्वतंत्र विशेषज्ञ संगठनों ने कई वर्षों के अनुसंधान के आधार पर रेडियो तंरगों के प्रभाव की सीमायें निर्धारित की हैं। 3 जी के मोबाइल टेलीफोन उन्हीं सीमाओं को पूरा करते हैं जिन्हें अन्य मोबाइल फोन करते हैं। इन सीमाओं में बड़े सुरक्षा मार्जिन भी सम्मिलित हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यु एच ओ) तथा संस्थाओं ने तंरगों के प्रभाव की सीमाओं के संबंध में सिफारिशें की हैं जिन्हें राष्ट्रीय प्राधिकरणों ने स्वीकार किया है। मनुष्य पर रेडियो तंरगों के संभावित प्रभाव की व्यापक जानकारी देने के लिए अनुसंधान जारी है। अन्य कम्पनियों के साथ–साथ एरिक्सन इस क्षेत्र में स्वतंत्र अनुसंधान करने का समर्थन करती है।

3 जी बेस स्टेशनों से रेडियो तंरगों का प्रभाव अन्य मोबाइल प्रणालियों के बेस स्टेशनों के रेडियो तंरगों के प्रभाव से अधिक नहीं है। बेस स्टेशन के ऐन्टेना (स्पॉट लाइट) से निकलने वाले प्रकाश की भांति ही एक विशिष्ट दिशा में रेडियो तंरगें प्रेषित करते हैं। इसका अभिप्राय यह है कि किसी घर की छत पर लगा ऐन्टेना रेडियो तंरगों को घर की तरफ नहीं बल्कि उससे दूर मोड़ देता है।

केवल एक ही स्थान ऐसा है जहां प्रभाव सीमा से अधिक हो सकता है और वह है बेस स्टेशन के ऐन्टेना के बहुत निकट का क्षेत्र। इसलिए ऐन्टेना ऐसे लगाए जाते हैं कि लोग उस क्षेत्र से बाहर रहें। ऐन्टेना से दूर जाने से रेडियो तंरगों के प्रभाव की तीव्रता आश्चर्यजनक ढंग से कम हो जाती है और लोग सामान्यत: जिन क्षेत्रों में रहते हैं वहां प्रभाव की सीमाएं वहां की सीमाओं से काफी कम होती हैं। ऐन्टेना चाहे किसी मास्ट पर. किसी घर की छत पर या किसी दीवार पर लगा हो. यह बात इन सब मामलों में लागू होती है।

अधिक जानकारी के लिए. देखिये

http://www.ericsson.com/health.

HI/LZT 123 8003 R1
© Telefonaktiebolaget LM Ericsson 2006